पृष्ठ-संख्या ८ से २४

द्वितीय अध्याय

दिनकर की जीवनी और व्यक्तित्व

जन्म तथा परिवार
व्यक्तित्व
व्यक्तित्व पर प्रभाव
शिक्षा,
दिनकर की रचनाएँ संक्षिप्त परिचय
दिनकर काव्य की युगीन पृष्ठभूमि
-- राजनीतिक
सामाजिक
धार्मिक
सांस्कृतिक
साहित्यिक

द्वितीय अध्याय

दि न क र की जी व नी औ र व्य क्ति त्व

जन्म तथा परिवार :

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म संवत् १९६५ अर्थात् ३० सितंबर ,१९०८ ई. में सिमरिया घाट ग्राम जिला मुंगेर (बिहार) में हुआ । वह ग्राम उस बजिलपुर से नजदीक है जहाँ विद्यापति ने शरीर छोडा था । दिनकर ने एक कृषक परिवार में जन्म लिया । उस समय देश पराधीनता के घने अंधःकार में डूबा हुआ था । उस संगीत/रात में रंगीन सुबह लेकर दिनकर का उदय हुआ । धीरे - धीरे उनकी प्रतिभा की किरणों चहूँ ओर फैलने लगीं । कोमल किरणों ने देखते - देखते प्रखर रूप धारण किया और आगे चलकर उसमें से क्रांति की ज्वाला प्रस्फुटित हुई । ऐसे महान तेजस्वी दिनकर का परिवार अत्यंत गरीबी की हालत में अपना गुजारा कर रहा था । सोने को निखर कर उठने के लिए तपना पडता है । उसी प्रकार परिस्थिति के आघातों को सहते सहते दिनकर की प्रतिभा विकसित होती रही ।

दिनकर के पिता का नाम रवि सिंह था । दिनकर जब दो साल के थे तभी उनके सिर पर से पिता का साया हट गया । पितृहीन अवस्था में माँ की उँगली पकडकर जीवन के उबड खाबड मार्ग से आगे बढने लगे । माँ ने उनका हाथ इतनी दृढता से पकडा था कि विकट परिस्थिति में भी उनके कदम डगमगाए नहीं । माता मनरूप देवी का सुहाग उजड गया था, चूडियाँ टूट गई थी लेकिन कलाई कमजोर नहीं हुई थी । दिनकर की शिक्षा का प्रबंध उन्होंने किया । वह खुद धूप में तपती रहीं पर अपने बच्चों पर कभी आँच तक आने नहीं दी। माँ के प्रति आदरभाव दिनकर इस प्रकार व्यक्त करते हैं । -- '' माँ तो मूर्तिमति करुणा है, उन्होंने हम लोगों के लिए होम दिया । ''[१]

---

१. युगचारण दिनकर - सावित्री सिन्हा, पृ. २ ।

उनके बड़े भाई का नाम वसंत सिंह और छोटे भाई का नाम सत्यनारायण सिंह था । दिनकर तीन भाइयों में मँझले थे । किशोरावस्था में ही उन्हें शादी की बेड़ियाँ पहनाईगईं । लेकिन ये बेड़ियाँ उनके पाँव की जंजीर नहीं बनीं । दिनकर के व्यक्तित्व निर्माण में उनकी पत्नी ' श्यामा ' के त्याग और बलिदान का महत्त्वपूर्ण योग रहा है । उसने अपने आप को मिटाकर पति को महान बनाया । पति की शिक्षा में वह कभी बाधा नहीं बनी । घर में कदम रखते ही सारी जिम्मेदारियाँ उसने संभाल लीं । परिवार के लिए उसने अपने जेवर तक बेच डाले । हालत की वजह से दोनों कच्ची उम्र में ही विचार से परिपक्व बन गए । भगवतीचरण वर्मा ने लिखा है -- '' दिनकर हमारे युग के यदि एकमात्र नहीं तो सबसे अधिक प्रतिनिधि कवि हैं, किंतु अचरज की बात है कि इस कवि के जीवन के सर्वोत्तम दिन और दिनों के भी सर्वोत्तम भाग जरूरतमंद परिवार के लिए रोटी कमाने में निकल गए । ''[२]

दिनकर के प्रथम पुत्र का नाम रामसेवक सिंह और छोटे का नाम केदारनाथ है । बड़ी पुत्री का नाम विनीता और छोटी का विभा । श्री गंगासरन सिंह ने उनके प्रति यह वक्तव्य किया था कि '' दिनकर पारिवारिक जीव हैं तथा परिवार के प्रति अपने दायित्वों के प्रति वे पूर्ण सजग हैं । वे एक कुशल गृहपति, तथा बड़े स्नेही पिता, पुत्र और पति हैं । परिवार से घुले-मिले होने के कारण जीवन में रास्ते वे रास्ते जाने की गुंजाइश नहीं होती । ''[३]

दिनकर का व्यक्तित्व :

आंतरिक प्रतिभा के साथ ही साथ दिनकर का बाह्य व्यक्तित्व कम आकर्षक नहीं था । इस संबंध में मन्मथनाथ गुप्त का कथन इस प्रकार है । --

---

२. दिनकर , सं. सावित्री सिन्हा, मन्मथनाथ गुप्त का लेख, पृ.१५-१६ ।
३. युगचारण दिनकर , सावित्री सिन्हा, पृ.४ ।

'' गोरा चिट्टा रंग , लंबाई पाँच फूट ग्यारह इंच, भारी भरकम शरीर , बड़ी-बड़ी आँखें जो रचना के दिनों में चिंतन क्लिष्ट लगती हैं पर बात करते समय या कविता पाठ करते समय प्रदीप्त हो उठती हैं , ललकार भरी बुलंद आवाज, तेज चाल और क्षिप्र बुद्धि ये हैं वह बहिरंग विशेषातायें जिनसे दिनकर का व्यक्तित्व बना है । ''[४]

दिनकर का व्यक्तित्व पर्याप्त आकर्षक , प्रभविष्णुता से पूर्ण था । उनके अंतर की समस्त विशिष्टतायें बाह्य रंग रूप में प्रतिबिंबित होती थीं ।

दिनकर जी सहज रूप से विनयशील थे । उनका व्यक्तित्व आडंबर रहित था । वे स्पष्टवादी थे । महाकवि एवं लोकप्रिय नेता होने का उन्हें अहंकार नहीं था । स्वच्छंद सेवा कर्म ही दिनकर का उद्देश्य था । वे अपनी साधना एवं बुद्धि पर विश्वास रखकर काम करनेवाले व्यक्ति थे । गांधीवादी द्विवेदी युगीन कवियों के इतिवृत्त मूलक आदर्शवाद उनकी कल्पना को आबद्ध नहीं कर सके । डॉ. राम नारायण सिंह ने कहा है -- '' गांधीवाद की आदर्शमूलक और सशक्त छाया से मुक्त रह सकना दिनकर के व्यक्तित्व की शक्ति और जीवन के प्रति उनकी अडिग आस्था का परिचय देता है । ''[५]

व्यक्तित्व पर विशेष प्रभाव :

दिनकर पर तुलसी और कबीर का प्रभाव पाया जाता है । तुलसी की समन्वयवादिता को दिनकर ने अपनाया था । यही वजह है कि उनके काव्य में क्रांति का कठोर स्वर और कोमल कल्पनाओं का मधुर स्वर एक साथ मिलता है ।

---

४. आज के लोकप्रिय हिंदी कवि रामधारीसिंह दिनकर - मन्मथनाथ गुप्त, पृ.५।
५. राष्ट्रकवि दिनकर और उनकी साहित्य साधना - प्रतापचंद जैसवाल,पृ.७१ ।

दिनकर को भारतेंदु, मैथिलीशरण , रामनरेश त्रिपाठी, सुभद्राकुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी और बालकृष्ण शर्मा से साहित्य रचना करने की प्रेरणा मिली । अंग्रेजी कवियों में शेले, वर्डसवर्थ का प्रभाव पाया जाता है तथा भारतीय कवियों में रवींद्रनाथ और इकबाल का । आर्य समाज के प्रवर्तक दयानंद का प्रभाव दिनकर के व्यक्तित्व पर पाया जाता है । दिनकर कहते हैं- '' जिस प्रकार मैं हिमालय और हिंद महासागर का ऋणी हूँ , उसी प्रकार रवींद्र, इकबाल और दूसरे कवियों का ऋण भी मुझ पर है । ''[६]

दिनकर पर अरविंद दर्शन का प्रभाव विशेष रूप से पाया जाता है। आधुनिक कवियों में दिनकर ही ऐसे कवि हैं जिन्होंने अरविंद का गहन अध्ययन किया है । '' जिन चिंतकों और कवियों ने विशाल मानव समाज की जटिल समस्याओं के समाधान का स्वप्न देखा है, उन्हें अरविंद की ओर जाना पडा ।''[७]

आज की समस्याओं का सही समाधान अरविंद के दर्शन में मिलता है । विज्ञान के कारण मनुष्य ने अपने लिए कई सुख-सुविधाएँ उपलब्ध कर ली हैं । लेकिन मनुष्य में मूलभूत परिवर्तन नहीं आया है । सिर्फ बुद्धि का विकास हुआ है । मन, प्राण , शरीर में कोई फर्क नहीं आया है । इसलिए मनुष्य का आंतरिक रूपांतर होना आवश्यक है । उसके सिवा समस्याओं के बाह्य समाधान अनुपयोगी हैं । अरविंद के इन विचारों का प्रभाव दिनकर पर पाया जाता है । अरविंद के सावित्री महाकाव्य से वे अत्यधिक प्रभावित हुए । मानव के उर्ध्वमुखी प्रेम का आदर्श सावित्री में अरविंद ने प्रस्तुत किया है, उसी प्रकार दिनकर ने उर्वशी में किया है ।

---

६. रेणुका - दिनकर , भूमिका ।

७. दिनकर का रचना संसार - छोटेलाल दीक्षित, पृ.३० ।

दिनकर को राष्ट्रीय काव्य लिखने की प्रेरणा गांधी, तिलक से मिली। गांधी के प्रति आदर रखते हुए भी दिनकर ने अहिंसावाद की कड़ी आलोचना की है। तिलक की ' स्वतंत्रता मेरा जन्मसिद्ध हक है ' इस घोषणा से दिनकर में जोश पैदा हुआ।

क्रांति के प्रवर्तक बेकन, न्यूटन, हॉब्स, कार्लमार्क्स, टालस्टाय का प्रभाव दिनकर पर पाया जाता है। धार्मिक जागरण से भी उन्हें प्रेरणा मिली। साम्राज्यवाद के विरुद्ध नारे लगानेवाले रूसो, लॉक, हॉब्स का प्रभाव पड़ा। कार्लमार्क्स का प्रत्यक्ष प्रभाव उनके कुरुक्षेत्र में पाया जाता है।

शिक्षा -

दिनकर ने प्राथमिक शिक्षा गाँव से प्राप्त की। असहयोग आंदोलन छिड़ा हुआ था। ऐसे समय विद्यार्जन के लिए वे गाँव से दो मील दूरी पर बारो नामक गाँव की पाठशाला में जाने लगे। वहाँ का वातावरण सांप्रदायिकता से मुक्त था। इस मुक्त वातावरण ने उन्हें उदार दृष्टि प्रदान की। मोकामाघाट के एच.ई. स्कूल से सन् १९२९ में मैट्रिक पास किया और वे पटना आए। आप मैट्रिक के सर्वश्रेष्ठ विद्यार्थी घोषित किए गए थे। इस सिलसिले में उन्हें 'भूदेव पदक ' प्राप्त हुआ था। दिनकर का विद्यार्थी जीवन कठोर परिश्रम और लगन का रहा। शिक्षा प्राप्त करने में उन्होंने कई मुसीबतें हँसते - हँसते झेलीं। अपने गाँव से मोकामा घाट तक पैदल पैदल जाते रहे। एक शायर ने कहा है--

सु होता है इन्सान ठोकरें खाने के बाद।
रंग लाती है हिना पत्थर पे पिस जाने के बाद ।।

यह उक्ति दिनकर के लिए योग्य साबित होती है। जिस प्रकार पत्थर पर पिस जाने पर ही मेहँदी रंग लाती है। उसी प्रकार संघर्षरत रहने से ही जीवन उस कदर निखर उठता है जैसे आग में तपकर सोना। विकट परिस्थिति में

विद्यार्जन करने से दिनकर का विद्यार्थी जीवन निखर उठा ।

इस प्रतिभावान कवि की प्रतिभा बचपन में ही अंकुरित हुई । रामनरेश त्रिपाठी के ' पथिक ' ने और मैथिलीशरण की ' भारत भारती ' ने उसे पल्लवित किया । इस प्रतिभावेली पर पहला पुष्प ' प्रणभंग ' खिल उठा । उसके उपरांत एक एक रचना-पुष्प खिल उठे । इन रचना पुष्पों की सुगंध से सारा हिंदी साहित्य महक उठा । विद्यार्थी दशा में ही पारिवारिक जिम्मेदारियाँ उठानी पड़ीं । अपनी पढाई छोडकर नौकरी करने पर मजबूर हुए । बी. ए. पास होने पर एक हाईस्कूल में हेडमास्टर के पद का स्वीकार किया । लेकिन कुछ ही दिनों में उन्होंने उस नौकरी से त्यागपत्र दे दिया । दिनकर पर कठिन परिस्थिति आई थी मगर परिस्थिति के सामने झुकना उन्हें मंजूर नहीं था । उस स्कूल के चेअरमैन बडे जमींदार थे । उस माहौल में दिनकर एक घुटन-सी महसूस करने लगे । '' जमींदारी प्रथा और धनतंत्र के खिलाफ उनकी कविताओं में जो कटुता व्यक्त हुई है, उसके मूल में बहुत कुछ वैयक्तिक अनुभव ही है । ''[१३]

आखिर में जब कोई चारा न रहा तब बिहार में रजिस्टरी की नौकरी स्वीकार की । उनका उन्मुक्त मन यहाँ पर भी नहीं रमा । उनका शरीर अपने परिवार के लिए सरकार की नौकरी कर रहा था । और मन सरकार के खिलाफ विद्रोही बन गया था । यही विद्रोह की आग जब हुंकार भरने लगी तब दिनकर पर कडी निगाह रखी गई । उन्होंने अपने आपको आजाद करने करने के लिए इस्तीफा दे दिया ।

दिनकर के व्यक्तित्व के अनुकूल वातावरण उन्हें मुजफ्फर कॉलेज में मिला।

---

१३. दिनकर - संपादिका - सावित्री सिन्हा, मन्मथनाथ गुप्त का लेख, पृ.१५ ।

वहीं उनके व्यक्तित्व को विकसित होने का अवसर प्राप्त हुआ । वहाँ पर वे हिंदी विभाग के अध्यक्ष रहे । १९५२ में उन्होंने इस्तीफा दिया और वे राज्यसभा के सदस्य हो गए । १९६४ में भागलपुर विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर (कुलगुरु) बने । वहाँ से भी त्यागपत्र दिया । इस प्रकार इस विद्रोही कवि का मन हर जगह विद्रोह करता रहा । संघर्ष से सामना करते वक्त उनकी विद्रोही प्रवृत्ति पनप उठी । देहात के प्राकृतिक सौंदर्य में वे खो नहीं गए । बल्कि दरिद्र और गरीब जनता की पुकार ने उनकी नींद हराम कर दी । वे दिन रात तडपते रहे , अपनी इस तडपन को उन्होंने काव्य के द्वारा व्यक्त किया । और समाज को , देश को जागृत किया । माँगने से न मिलने पर छीन कर लेने की प्रवृत्ति उनमें बढ गई ।

दिनकर की रचनाएँ :

दिनकर बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं । वे कवि होने के साथ- साथ गद्य लेखक एवं समीक्षक हैं । बाल साहित्य की रचना भी आपने की है । काव्य में मुक्तक और प्रबंध दोनों प्रकार की रचनाएँ की हैं । दिनकर जी के प्रबंध काव्य तीन हैं -- कुरुक्षेत्र, रश्मिरथी और उर्वशी ।

दिनकर जी के मुक्त काव्य निम्न लिखित हैं --

१. रेणुका - इसका प्रकाशन सन् १ ९३५ में हुआ। इस पर छायावादी प्रभाव परिलक्षित होता है । अतीत का रोना और जीवन की नश्वरता चित्रित की है । इस कृति की कविताओं को चार वर्गों में विभाजित किया जाता है । (अ) जन जागरण संबंधी कविता (ब) वैभव की स्मारक (क) प्रकृति विभा को चित्रित करनेवाली (ड) व्यंग्यात्मक कविताएं ।

२. हुंकार - काव्य संग्रह १९३६ में प्रकाशित हुआ । इसमें राष्ट्रीयता एवं क्रांति

का संगम दिखाई देता है । यहाँ कवि वर्तमान के प्रति सजग है। शोषाण के विरुद्ध आवाज उठाता है । इसमें वर्ग संघर्ष की प्रबल चेतना है जिससे दिनकर जी प्रगतिवादी काव्य धारा के बहुत समीप दिखाई पड़ते हैं ।

३. रसवंती - सन १९४० में प्रकाशित हुई । इसमें प्रेम तथा शृंगार का वर्णन अधिक है । इसकी रचनाएँ रूमानी विचारधारा पर आधारित हैं । हुंकार के बदले इस कृति को नूपुरों की झनकार का काव्य कहा जा सकता है । यह प्रेम शृंगार एवं नारी भावना प्रधान कविताओं का संग्रह है ।

४. द्वन्द्वगीत - इसमें सन १९३२ से १९३६ तक की रचनाएँ संकलित हैं । यहाँ द्वन्द्वात्मक गीतों की प्रधानता है । मुख्यत: आस्था - अनास्था, सुख-दुख का द्वन्द्वात्मक वर्णन हुआ है ।

५. सामधेनी - सन १९४१ से १९४६ तक की रचनाएँ संकलित हैं । इस संग्रह में क्रांति का स्वर प्रधान है । क्योंकि सामधेनी जिस समय रची गई सर्वत्र क्रांति की ध्वनि विद्यमान थी ।

६. धूप- छाँह- १९४५, यह आलोपयोगी कविता संग्रह है ।

७. बापू - इसकी रचना सन् १९४७ में हुई । इस कृति में दिनकर ने बापू के महिमामय व्यक्तित्व को उभारा है । इसमें गांधी जी के निर्वाण के बाद द्वितीय संस्करण में श्रद्धांजलि विषायक कविताएँ जोड दी गई हैं ।

८. इतिहास के आँसू - यह रचना १९५२ में प्रकाशित हुई । इसमें कवि की प्राचीन एवं नवीन ऐतिहासिक आधारवाली कविताएँ संगृहीत हैं ।

९. धूप और धुआँ - इसका रचना काल सन् १९५३ है । यहाँ कवि की आशा निराशा की भावना समन्वित रूप में प्रकट हुई है । इसी कविताओं में गांधीवाद पर व्यंग्य किया है ।

१०. नीम के पत्ते - इसका रचना काल १९५६ है । इसमें व्यंग्य और वक्रोक्ति पूर्ण कविताएँ हैं ।

११. नए सुभाषित - इसका रचनाकाल सन् १९५७ है । यहाँ दिनकर ने अपनी मान्यताओं को सूक्ति का जामा पहना कर व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है ।

१२. नील कुसुम - १९५४ में प्रकाशित काव्य संग्रह है । इन कविताओं में दिनकर ने सामाजिक तथा दार्शनिक विचारों को अभिव्यक्त किया है । कवि ने इस कृति में व्यक्ति और समाज , जीवन और मृत्यु , हिंसा और अहिंसा, कल्पना तथा यथार्थ का स्वर दिया है ।

१३. दिल्ली - इसका रचना काल सन् १९५६ है । चार कविताओं के इस संकलन में दिल्ली के माध्यम से नई शासन अवस्था एवं बढती हुई विलासिता की आलोचना की है । यहाँ कवि बडी निर्भीकता एवं स्पष्टवादिता के दर्शन होते हैं ।

१४. परशुराम की प्रतिज्ञा - चीनी आक्रमण के बाद लिखी गई इस संग्रह की कविताओं में वक्त पडने पर शक्ति प्रयोग को अनिवार्य माना है । ओज, उत्साह, क्रोध की अभिव्यक्ति हुई है ।

१५. कोयला और कवित्व - इस रचना का प्रकाशन सन् १९६४ में हुआ । इसमें ४० कविताएँ हैं । यहाँ कवि के नए विचार परिलक्षित होते हैं । कवि ने यहाँ कला एवं धर्म के सामंजस्य पर बल दिया है ।

१६. आत्मा की आँखें -- रचना काल सन् १९६४ है । इसमें अंग्रेज कवि डी.एच. लॉरेन्स की कविताओं के भावानुवाद हैं ।

१७. हारे को हरिनाम - रचना काल १९७० । यहाँ आस्थावान आस्तिक

कवि के विरागी मन के दर्शन होते हैं । भाषा में अंग्रेजी, विदेशी शब्दों का प्रयोग है ।

दिनकर के प्रबंध काव्य :

१. कुरुक्षेत्र - इस प्रबंध काव्य की रचना १९४६ में द्वितीय महायुद्ध की भूमिका पर हुई है । कुरुक्षेत्र आधुनिक युग की गीता है । यहाँ पर युद्ध जैसी शाश्वत समस्या पर विचार किया गया है ।

यह वह प्रथम प्रबंध काव्य है जिसके प्रकाशित होते ही दिनकर की ख्याति देश-विदेश में हो गई । कुरुक्षेत्र सात सर्गों में विभक्त एक ऐसा विचारप्रधान प्रबंध काव्य है जिसमें महाभारतकालीन युधिष्ठिर और भीष्म पितामह के संवादों को आधार बनाकर युद्ध की समस्या पर अथवा हिंसा - अहिंसा की समस्या पर कवि ने युगान्तकारी विचार प्रस्तुत किए हैं । इस काव्य में मूल समस्या युद्ध की है क्योंकि महाभारत के युद्ध की पृष्ठभूमि बनाकर यहाँ कवि ने युधिष्ठिर और भीष्म के माध्यम से धर्म - अधर्म, कर्तव्य - अकर्तव्य , कर्म- अकर्म , नीति - अनीति आदि से संबंधित अपने विचार व्यक्त किए हैं ।

२. रश्मिरथी - दिनकर का यह प्रबंध काव्य १९५७ में प्रकाशित हुआ । इसका कथानक सात सर्गों में विभक्त है । इसमें महाभारत के पराक्रमी महारथी कर्ण का जीवन चरित्र अंकित है । इसमें कवि ने युग- युग से प्रताड़ित एवं पद-दलित कर्ण के चरित्र को उन्नत करके नूतन मानवता की प्रतिष्ठा में अत्यधिक सहयोग प्रदान किया है ।

३. उर्वशी - प्रस्तुत प्रबंध काव्य की रचना सन १९६१ में हुई । यह दिनकर की एक ऐसी नूतन विचारप्रधान कृति है, जिसमें कवि ने नर - नारी की प्रेम-समस्या पर अत्यंत गंभीरता एवं सूक्ष्मता के साथ विचार किया है । इस काव्य में

पुराण प्रसिद्ध पुरुरवा और उर्वशी की व्यथा संकलित है । यह गीति-नाट्य जैसी प्रबंध कृति एक अनुपम एवं अद्वितीय रचना है । इसमें कवि ने शृंगार रस के अंतर्गत प्रेम एवं सौंदर्य की मनोरम व्याख्या की है तथा काम का युगानुकूल विवेचन किया है ।

दिनकर काव्य की युगीन पृष्ठभूमि :

१. राजनीतिक पृष्ठभूमि - जिस समय दिनकर का प्रादुर्भाव हुआ वह काल राष्ट्रीय चेतना की प्रगति का काल है । विदेशी शासन के खिलाफ आवाज बुलंद हो रही थी । उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में राजनीतिक स्वतंत्रता की ओर राष्ट्र का ध्यान आकर्षित हुआ । बीसवीं शताब्दी में सक्रिय राष्ट्रीयभावना निर्माण हुई । इस राष्ट्रीय भावना पर बंगभंग की नीति का गहरा प्रभाव पड़ा । बहिष्कार आंदोलन ने इस नीतिका विरोध करके स्वराज्य मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है की मेघ गर्जना की । दो दल नरम और गरम निर्माण हुए ।

प्रथम महायुद्ध के दरमियान ब्रिटिश प्रधान मंत्री एस्किथ ने आश्वासन दिया कि भविष्य में भारत के प्रश्नों को नवीन दृष्टि से देखा जाएगा । लेकिन युद्ध के उपरांत ' जालियाँवाला कांड 'की अमानवीय घटना हुई । देश को महात्मा गांधी का नेतृत्व मिल गया । ' महात्मा गांधी ने सत्याग्रह को माध्यम बनाया तथा उन्होंने आंदोलनों को जन आंदोलन बनाकर उसे राष्ट्रीय स्तर प्रदान किया । गांधी जी ने सामाजिक एवं आर्थिक क्षेत्र में राष्ट्र की स्थिति को सुधारने के लिए सुनियोजित योजना की स्थापना की । विदेशी कपडों पर बहिष्कार डालने के लिए हाथ कताई , खादी की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया । गांधी जी प्रत्येक योजना कामयाब नहीं हुई । उनके सविनय अवज्ञा आंदोलन में कुछ अवांछनीय घटनाएँ घटित हुई । जो

कार्यकर्ताओं को निराशा के गर्त में ले गई । हिंदु मुसलमान दंगे हुए । दूसरी ओर शासन के विरुद्ध विद्रोह भी आरंभ हुआ ।

देश में सुधारविषयक योजना के लिए ' साइमन कमीशन ' की नियुक्ति हुई । लेकिन सभी ने इसका बहिष्कार किया । किसान और मजदूरों का आंदोलन बढा । देश में समाजवादी भावनाका प्रभाव फैलता गया । २६ जनवरी १९३० को राष्ट्र ने पूर्ण स्वराज्य का उत्सव मनाया और सत्याग्रह की सरिता सर्वत्र उमड पडी। नमक आंदोलन ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को आतंकित किया ।

१९४२ में भारत छोडो आंदोलन के फलस्वरूप सभी प्रमुख नेताओं की गिरफ्तारियाँ हुई । १९४६ में भारत में अंतरिम सरकार बनी । उसी समय कलकत्ता, नोआखाली, बिहार और पंजाब में भयंकर सांप्रदायिक दंगे हुए । १५ अगस्त को भारत में स्वतंत्रता का स्वर्ण विहान आया। तत्पश्चात नव चेतना नव निर्माण में परिणत हो गई । स्वतंत्र भारत की राजनीतिक चेतना राष्ट्रीयता और अंतराष्ट्रीयता के रूप में विकसित हो रही है । भारत का पंचशील संदेश मानव जाति के लिए अमर देन है । हिंदी साहित्य ने इस नवराष्ट्रीय चेतना का अनुसरण ही नहीं किया, उसे प्रेरित भी किया और मार्ग प्रशस्त किया ।

सामाजिक पृष्ठभूमि - जिस समय दिनकर का प्रादुर्भाव हुआ , उस समय सामाजिक सुधार की भूमिका तैयार हो रही थी । विकृत परंपराओं को नष्ट करना आवश्यक था । इस लिए शिक्षा आवश्यक थी । महादेव गोविंद रानडे , विष्णु शास्त्री चिपळूणकर, गोखले आदि ने शिक्षा प्रसार और स्त्रियों में रूढियों पर प्रहार करने का कार्य किया । बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में विविध समाज सुधारक संस्थाओं का निर्माण हुआ । इस युग को समाज सुधार का युग माना जाता है । भारत सेवक समाज, सोशल कन्फेन्स , शारदा सदन और सेवासदन जैसी संस्थाओं ने इस कार्य में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया ।

अंग्रेजों ने भारत में प्रवेश करते ही भारतीय समाज की व्यवस्था पर आघात करना शुरू किया । उन्होंने अपने स्वार्थ के लिए यांत्रिक पद्धति का विकास करना शुरू किया ।इस से राष्ट्र की प्रगति कुंठित नहीं हो सकी । यांत्रिक सुविधाएं अनायास ही प्राप्त हुई । यातायात एवं समाचार पत्रों ने राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संपर्क को दृढ करने में सहायता पहुँचाई । दूसरी तरफ उसके प्रति गंभीर प्रतिक्रिया आरंभ हुई । क्योंकि यांत्रिक सभ्यता के रचनात्मक पहलू की ओर राष्ट्र की सहानुभूति थी किंतु उसकी असंगतियों के प्रति सभी नाराज रहे । फलस्वरूप गंभीर प्रतिक्रिया निर्माण हुई ।

भारतीय पाश्चात्य साहित्य के संपर्क में अध्ययन के माध्यम से आए । उससे नित्यप्रति के जीवन में एक बौद्धिक दृष्टि आई और प्राचीन विकृतियों के प्रति विद्रोह शुरू हुआ । बीसवीं शताब्दी के आरंभ में सामाजिक जीवन में संपूर्ण रूप से नई मनोदृष्टि का आविर्भाव न हो सका क्योंकि प्राचीन आदर्श वादी दृष्टि उसके साथ थी ।

नवीन युग में क्रांति का फैलाव हुआ । इसका कारण फ्रांसीसी राज्यक्रांति द्वारा संप्रेषित समानता, स्वतंत्रता एवं भ्रातृत्व की भावना का नारा था । समाज की प्राचीन जीवन प्रणाली के प्रति विद्रोह की कल्पना उसमें अभिव्यक्त हुई । इसी आधार पर व्यक्ति की महत्ता को नष्ट करनेवाले बंधनों के प्रति तीव्र विरोध दर्शाया गया । अस्पृश्यता निवारण के लिए आवाज उठाई । नारी को समान अधिकार दिलाने की कोशिश हुई ।

पूंजीवाद के शोषण के विरुद्ध विद्रोह किया गया । इस प्रकार का प्रयत्न पाश्चात्य देशों में हो रहा था । उसी से हमारे देश की राष्ट्रीय भावना ने प्रोत्साहन लिया । राजनीतिक आंदोलन में मजदूर , किसान ने इसी से प्रेरित होकर सक्रिय भाग लिया । यहाँ असंतोष हमारी सामाजिक भावना को

बढावा दे गया ।

धार्मिक पृष्ठभूमि :

जिस समय दिनकर का पादुर्भाव हुआ उस समय के धार्मिक आंदोलनों में प्रमुख है ब्रह्मसमाज, आर्य समाज , महाराष्ट्र समाज, थियोसोफी सनातन धर्म, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद और अरविंद के वेदांत दर्शन ।

थियोसोफिकल सोसाइटी के द्वारा एनीबेजंट ने विज्ञान की बौद्धिकता का विरोध करके आध्यात्मिकता का उत्थान किया । रामकृष्ण परमहंस तथा उनके शिष्य विवेकानंद के गहन चिंतन तथा आध्यात्मिकता का प्रभाव हिंदी साहित्य पर पडा । योगी अरविंद की रचनाओं में आध्यात्मिक आनंद की अनुभूति है । उनके अति मानववाद में पृथ्वी को स्वर्ग बनाने की भावना है । अरविंद दर्शन का हिंदी काव्य पर स्पष्ट प्रभाव देखा जाता है । गांधी जी का जीवन दर्शन गीता का अनासक्ति योग है । सत्य और अहिंसा के बल पर गांधी का मानवतावाद खडा रहा । गांधी जी ने भारतीय जनता में आत्मबल , नैतिकता, दृढता, उदारता का विकास किया ।

भारत में अंग्रेजी शासन ने ईसाई धर्म का प्रसार शुरू किया । उसका एक परिणाम यह हुआ कि भारत में धार्मिक सुधार में एक नवचेतना आई । धार्मिक आंदोलनों के द्वारा बाल विवाह, मिथ्या रूढियाँ, जाति-भेद , धार्मिक मतभेद, समुद्र यात्रा निषेध, दहेज प्रथा आदि का घोर विरोध किया गया और मानवतावाद तथा आध्यात्मिकता का इस युग में प्रसार हुआ ।

सांस्कृतिक पृष्ठभूमि -

जिस युग में दिनकर का प्रादुर्भाव हुआ उस समय भारतीय समाज एक वर्ग-

विशिष्ट के कारण धर्म के मूल स्वरूप से विछिन्न हो गया था । रूढियों एवं परंपराओं में संस्कृति आवद्ध हो गई थी । अनुभव प्रामाण्य की अपेक्षा ग्रंथ प्रामाण्य की प्रधानता थी । भारतीय संस्कृति के इन्हीं विकृत तथ्यों को लक्ष्य कर विदेशी उसके अस्तित्व पर प्रहार कर रहे थे । भारतीय चिंतक युरोपीय जीवन से प्राप्त स्वस्थ एवं उपयोगी तत्त्वों से आकर्षित हो रहे थे । उनके समक्ष यह प्रश्न था कि इन तत्त्वों को किस प्रकार हम अपनी प्राचीन गरिमा के साथ आत्मसात करे । दार्शनिक जीवन में परंपरागत निवृत्ति मार्गीय जीवन धारणा का प्राबल्य था । सामाजिक जीवन कुरीतियों से भर गया था ।

इसी परिपार्श्व में राजा राममोहन राय का प्रवेश हुआ । उनमें पूर्व एवं पश्चिम के सांस्कृतिक विचारों में एकता और समानता लाने की भावना विद्यमान थी । उनके जीवन का मूल उत्स भारतीय वेदांत था । फिर भी वे ईसाई धर्म के नीतितत्त्व एवं मुसलमानों के देवता विषयक दृष्टिकोण से प्रभावित थे ।

राजा राममोहन के उपरांत समाज के प्रधान देवेंद्र ठाकुर हुए । उन्होंने यह स्पष्ट किया कि जीवन की अन्य स्थितियों के सदृश्य सांस्कृतिक स्थिति भी गतिशील है । सांस्कृतिक जीवन भी ऐतिहासिक प्रक्रिया के अनुरूप परिवर्तित होते रहते हैं । अत: अतीत की संस्कृति हमारे नवीन युग की संस्कृति नहीं हो सकती ।

केशवचंद्र सेन ने सांस्कृतिक गतिविधियों को सामाजिक गतिविधियों से अलग नहीं माना ।

आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानंद थे । उन्होंने भारतीय संस्कृति का विवेचन करते हुए कहा -- '' वेद ही प्रमाण ग्रंथ हैं, वैदिक काल में मानव

संस्कृति पूर्णावस्था में पहुँची हुई थी । समाज रचना के श्रेष्ठ तत्त्व उस युग के वर्णाश्रम धर्म में हैं ।"[१]

रामकृष्ण ने ईश्वर विषायक निगूढ सत्य का साक्षात्कार संस्कृति में डूब कर किया । उन्होंने युग के बौद्धिक सांस्कृतिक संचरण को अनुभूति प्रदान की। उनके शिष्य विवेकानंद ने राष्ट्र की पीडा को समझाकर राष्ट्रीय स्तर पर चल रहे सांस्कृतिक अंतर्द्वन्द्व को एक सम्यक अवस्था प्रदान की । विवेकानंद के दार्शनिक दृष्टिकोण का आधार भारत का वेदांत दर्शन था ।

गांधी जी ने सत्य एवं अहिंसा का प्रचार किया । इन दो तत्त्वों पर प्रतिष्ठित उनका जीवन दर्शन सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक क्षेत्र में सक्रिय हुआ । गांधी जी वेद, वेदांत, गीता से प्रभावित न होकर उन्होंने बाइबल एवं कुराण के अंतरंग तत्त्वों का स्वीकार किया ।

इस सांस्कृतिक परिस्थिति का प्रभाव हिंदी साहित्य पर हुआ ।

साहित्यिक पृष्ठभूमि :

दिनकर के काल का साहित्यविषाय अपने पूर्ववर्ती काल का छायावाद से भिन्न रहा । दिनकर जिस प्रगतिवादी काल के प्रवर्तक थे उसका निर्माण द्विवेदीयुगीन छायावाद युग के साहित्य से होकर भी वह अपनी मूलभूत प्रेरणा में उससे एकदम भिन्न है । वह छायावाद के बाद का व्यापक सामाजिक चेतना वाला साहित्य है । इस काल में साहित्य के प्राचीन मानदंडों को हटाया गया । साहित्य में नवीन विचारधारा के अनुरूप रूप और भाव का मिश्रण हुआ ।

---

१. आधुनिक हिंदी काव्य - राजेंद्रप्रसाद मिश्र, पृ. ८३ ।

इस काल का साहित्य युग की माँग को पूरा करनेवाला है । इस समय कविता, उपन्यास, आलोचना में एक नवीन चेतना के दर्शन हुए । जनवादी दृष्टिकोण को साहित्य के विविध क्षेत्रों में प्रतिष्ठित किया । नवीन दिशाओं, एवं मान्यताओं को अपनाया गया । छायावाद की प्रेम सौंदर्य भाव व्यंजना इस काल के कवियों की भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त सिद्ध न हुई। छंद के बंधन टूट गए और मुक्त छंद का निर्माण हुआ।इससे मुक्त भावनाओं की अभिव्यक्ति प्रवाहपूर्ण धारा में हुई । इस काल में कविता का आलंबन जन-जीवन बन गया ।

०